भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 22-09-2026

बिहार में एल-नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु आवश्यक कृषि परामर्श

जून से लेकर अब तक, राज्य में अब भी मानसूनी वर्षा में लगभग 37% की कमी बनी हुई है। सितम्बर माह के बीते 3 हफ्तों में भी अब तक राज्य में मात्र 119.6 मिमी ही वर्षा दर्ज की गई, जो कि सामान्य से लगभग 23% कम है। राज्य के सभी 23 जिलों में वर्षा की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, विशेषकर शिवहर (**-62**%) और सीतामढ़ी (**-61**%) में। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) पटना केंद्र के अनुसार, आने वाले 2 दिनों में राज्य के अधिकतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है, तत्पश्चात आने वाले 3 दिनों में तापमान में 2-4°सेल्सियस की गिरावट का पूर्वानुमान है। जबकि आने वाले 5 दिनों में राज्य के न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन की संभावना नहीं है। दिनाँक 24-26 सितम्बर के मध्य, राज्य में अनेक स्थानों पर मेघ-गर्जन/वज्रपात और तेज हवा के साथ भारी से अति भारी स्तर की वर्षा की संभावना है। इस स्थिति में, खरीफ की फसलों और पशुधन को अधिक वर्षा से होने वाले संभावित नुकसान से बचाने के लिए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कुछ महत्वपूर्ण उपायों को अपनाने की सलाह दी गई है:

- सूखे से जूझ रहे इलाकों में इस संभावित वर्षा का अधिकतम लाभ लेने के लिए, खेतों की मेड़ों की मरम्मत करें ताकि खेतों में ही वर्षा जल का संचय किया जा सके। खेत की जल धारण क्षमता बढ़ाने के लिए मेड़ों की ऊँचाई (20-25 सेमी तक) बढ़ा दें।
- यथासंभव, वर्षा के जल संचय हेतु, वर्षा जल प्रबंधन तकनीकियों जैसे- छतों पर वर्षा जल संचयन, तालाब, परकोलेशन टैंक, कंटूर बंडिंग एवं ग्रेडेड बंड, चेक डैम, गली प्लगिंग, रिचार्ज पिट, रिचार्ज कुएँ, रेज्ड और सनकेन बेड प्रणाली को अपनाएं।
- खेत के एक छोटे से हिस्से में गड्ढानुमा आकार अवश्य बनाएं। वर्षा संकट के समय इसमें संचित जल को सिंचाई के लिए उपयोग किया जा सकता है।
- अत्यधिक वर्षा की स्थिति में, जिन निचले क्षेत्रों में जलजमाव की संभावना हो, वहां मक्का, अरहर और सब्जियों की फसल में अतिरिक्त पानी निकलने के लिए निकास नालियां अवश्य तैयार करें अन्यथा पौधों में जड़-गलन की समस्या हो सकती है।
- पक चुकी सब्जियों की समय पर तुड़ाई करके सुरक्षित स्थान पर भंडारण कर लें।
- सब्जी फसलों में मल्चिंग करें जो अधिक बारिश की स्थिति में पौधों को टूटने/ गलने से बचाएगी।
- धान की फसल में, प्रजनन वृद्धि के महत्वपूर्ण चरण जैसे बाली बनना/ निकालना और फूल आना/ पुष्पन (सबसे संवेदनशील चरण) की अवस्था में एक सिंचाई अवश्य करें।
- वृद्धि के इन चरणों पर पानी की कमी के कारण आने वाले तनाव (जैसे सूखा/पोषण की कमी) से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% (20 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेशियम क्लोराइड / 0.5%-1% (5-10 ग्राम प्रति लीटर पानी) पोटेशियम नाइट्रेट के घोल का छिड़काव करें।
- संभावित स्थितियों में कीट और बीमारी के प्रकोप से बचाव के लिए फसलों की निगरानी अवश्य करें, रोग-ग्रस्त पौधों को हटाएं और आवश्यकता पड़ने पर गंभीर स्थितियों में ही अनुमोदित दवा की अनुशंसित मात्रा का प्रयोग करें।
- कीट प्रबंधन के लिए खेतों में फेरोमोन और स्टिकी ट्रैप लगाएं।
- पशुओं के लिए हर समय स्वच्छ एवं पर्याप्त मात्रा में पेयजल की उपलब्धता बनाए रखें।
- पशुओं को हरा चारा काटकर तुरंत न दें, इसे रात भर जमीन में फैलाकर सुखाने के बाद ही दें।
- अत्यधिक वर्षा की स्थिति में पशुओं को सुरक्षित पशु शेड में रखें और उन्हें फफूंदी वाला भूसा न खिलाएं।

- सरसों की समय से बुवाई के लिए (उचित समय- 15 अक्टूबर से 15 नवंबर), पूसा सरसों- 28, पूसा सरसों- 30, पूसा केसरी-5111 किस्म का चयन कर सकते हैं। इसके लिए मिट्टी में उचित नमी होने पर समय पर खेत की तैयारी कर लें, संतुलित उर्वरक का प्रयोग करें, उचित बीज दर एवं कतार दूरी अपनाएं।